विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
University Grants Commission
Quality higher education for all

पुस्तक शीर्षक

भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की भूमिका

(क्षेत्रीय आकांक्षाओं एवं राष्ट्रीय महत्वाकांक्षाओं के मध्य एक द्वंद)

Role of Regional Political Parties in Indian Politics

(Dialectic between regional aspirations and national ambition)

लेखिका

डॉ० सांत्वना पाण्डेय

सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

अध्यायीकरण

१. क्षेत्र एवं क्षेत्रवाद: एक सैद्धांतिक समीक्षा

२. दल प्रणाली एवं क्षेत्रीय दलों का उदय एवं गठन

३. क्षेत्रीय दल: विचारधारगत एवं रणनीतिक आधार

४. क्षेत्रीय आकांक्षाएँ एवं राजनीतिक स्थिरता का द्वंद

५. क्षेत्रीय दल: राष्ट्रीय राजनीति में प्रभाव एवं हस्तक्षेप

६. समीक्षा एवं निष्कर्ष

प्राक्कथन

प्रस्तुत पुस्तक क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के अस्तित्व एवं उनके मध्य राष्ट्रीय स्तर के राजनीतिक पटल पर स्वयं को स्थापित करने के द्वंद को बयान करने का एक सूक्ष्म प्रयास है। मूल रूप से पुस्तक छ अध्यायों में विभाजित है जो कहीं न कहीं एक दूसरे को व्याख्यायित आधार पर समर्थन प्रदान करने का प्रयास करते हैं। प्रथम अध्याय सैद्धांतिक आधार पर क्षेत्रवाद की संकल्पना को प्रस्तुत करता है एवं सम्पूर्ण भारत में क्षेत्र विशेष के राजनीतिक महत्व का विशद विश्लेषण करता है। पुस्तक मूल रूप से राज्यवार क्षेत्रीय एवं राज्य आधारित राजनीतिक दलों की सूचीबद्ध चुनाववार जानकारी प्रदाय करने की तुलना में उनके व्यक्तित्व, कृतित्व एवं सत्ता में सहभागिता के लिए किए गए संघर्ष का विचारात्मक विश्लेषण करती है।

क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के उदभव एवं उनसे जुड़ी हुई सामाजिक परिस्थितियों का निष्पक्ष विश्लेषण करता द्वितीय अध्याय भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में दल प्रणाली के विभिन्न पहलुओं की भी चर्चा करता है तथा साथ ही सामाजिक एवं जातिगत समीकरणों की पूर्ति एवं इसके महत्व को भी रेखांकित करता है।

तृतीय अध्याय क्षेत्रीय दलों की विचारधारात्मक सुदृंता का मूल्यांकन करने के साथ ही उनके द्वारा चुनावी जीत को सुनिश्चित कर आम जनता के हृदय में अपनी जगह बनाने के प्रयासों का लेखा जोखा प्रस्तुत करता है। समयावधि के अनुरूप क्षेत्रीय दलों के राष्ट्रीय राजनीति में उपयोगिता निरंतर अध्यन एवं विश्लेषण का विषय है। जहां पर लेखिका ने उसे न्यायसंगत ढंग से पूर्ण करने का विनम्र प्रयास किया है।

चतुर्थ अध्याय पाठकों के मौलिक चिंतन एवं समीक्षा के द्वार खोलता हुआ अखिल भारतीय आधार पर वास्तविक क्षेत्रीय असमानता का जमीनी स्तर पर मूल्यांकन करते हुए विकास की असमानता मूलक अवधारणा को राजनीति में स्थायित्व के पहलू से जोड़ने का प्रयास करता है।